Date 07/04/2020

BA-I
Paper-I
Unite-5

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U, Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal1765@gmail.com

Basic Introduction of Chavark Philosophy
(चार्वाक दर्शन सामान्य परिचय)

भारतीय दर्शन की प्रवृति अध्यात्मिक है। इससे यह मान लेना कि भारतीय दर्शन पूर्णतः अध्यात्मिक है, गलत होगा। भारतीय विचारधारा में अध्यात्मवाद के साथ-साथ जड़वाद या भौतिकवाद सिद्धान्त का भी प्रभाव मिलता है। चार्वाक दर्शन जड़वादी सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है। जड़वाद वह सिद्धान्त है जिसमें जीव को ही प्रधानता माना गया है। इसी से आत्मा (चेतना) मन, तथा अन्य सभी सांसारिक वस्तुओं की उत्पत्ति होती है। यह अध्यात्मिक सिद्धांत के विपरीत है। जड़वादी विचारधाराओं का उल्लेख भारतीय परंपरा में वैदिक काल से ही है, परन्तु इसे तार्किक आधार पर व्यवस्थित करने का श्रेय चार्वाक दर्शन को ही है।

चार्वाक दर्शन को चार्वाक कहते है जिसमें काफी मतांतर दृष्टिगत है। पहली मान्यताओं के अनुसार 'चार्वाक' शब्द की उत्पत्ति 'चर्व' धातु से हुआ है, जिसका अर्थ चबाना अथवा खाना होता है। इस दर्शन का मूल मंत्र खाओ पिओ मौज करो है। खाने पीने पर अत्यधिक बल देने के कारण इस दर्शन का नाम चार्वाक पड़ा। दूसरी मान्यताओं के अनुसार चार्वाक

शब्द दो शब्दों के मेल से बना है 'चारु' और 'वाक्'
'चारु' का अर्थ मीठा वाक् का अर्थ वचन होता है।
अतः चार्वाक का अर्थ है मीठे वचन बोलने वाला।
इस दर्शन में भौतिक सुख एवं आनन्द की चर्चा की
गयी है जो सर्वजन को प्रिय है। इसी कारण
इस दर्शन को चार्वाक दर्शन कहा जाता है, दूसरी
मान्यताओं के अनुसार चार्वाक एक व्यक्तिविशेष का
नाम था, महाभारत के अनुसार संभवतः वह राक्षस
था। उन्होंने इस विचारधारा को साधारण मनुष्यों
के बीच रखा। जिससे साधारण मनुष्यों में राक्षसी
प्रवृत्ति की वृद्धि हो। कालांतर में इसके अनुयायी
बढ़ते गये। जिसके फलस्वरूप इस दर्शन का नाम
चार्वाक शब्द से संबोधित किया जाने लगा।

इस विचारधारा को लोकायत भी कहते हैं क्योंकि
इसमें प्रत्यक्ष लोक (जगत) की ही एकमात्र सत्ता को
स्वीकार करके 'परलोक' का निषेध किया गया है।
साथ ही यह जनसामान्य की रुचि का प्रतिनिधित्व
करता है।

देवताओं के गुरु बृहस्पति को इस दर्शन का जनक
माना जाता है। ऐसी मान्यताएँ हैं बृहस्पति ने
इस दर्शन का प्रचार दानवों के बीच उनके
विनाश के लिये किया था। वास्तविकता जो हो
परन्तु वर्तमान में इस विचारधारा से संबंधित

कोई स्वतंत्र मूल ग्रन्थ नहीं है। इस दर्शन से संबंधित शास्त्रीय प्रमाण बृहस्पति के सूत्र कहे जाते हैं जिसको इनके विरोधियों के द्वारा नष्ट कर दिया गया है, जो वर्तमान में अप्राप्त है। वर्तमान में इस दर्शन से संबंधित जो भी जानकारी प्राप्त होता है, उसका आधार विभिन्न सम्प्रदायों का विवादास्पद ग्रन्थ है, जिसमें इसका खंडन किया गया है। अन्य ग्रन्थों के विवरण के आधार पर इस दर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत करना गलत होते हुए भी हमलोगों की बाध्यता है। यह संभव है कि अन्य ग्रन्थों में इसके दुर्बल पक्ष को फोकस किया गया हो और इसके सबल पक्ष की उपेक्षा की गयी है।

भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से ही यह दर्शन उपहास का विषय रहा है। आस्तिक दर्शनों में इसको विशेष रूप से उपहास प्राप्त है। इसका कारण वेदों तथा ईश्वर में विश्वास नहीं करना है। इसके उपहास का सबसे मूल कारण इसका नैतिक दुर्बल पक्ष है जिसने सामाजिक व्यवस्था में नैतिक उत्तरदायित्व के जड़ को हीला दिया। इस दर्शन ने अध्यात्म एवं परंपरा के निषेध के साथ ही मानव जीवन के आधारभूत मूल्यों का भी निषेध किया है। इसी कारण यह भारतीय परंपरा में उपहास का विषय बना है। वहीं मानव जीवन के आधारभूत मूल्यों के मानने के कारण वेद प्रामाण्य के विरोध एवं ईश्वर के निषेध के बाद भी जैन एवं बौद्ध दर्शन अपनी लोकप्रियता को बरकरार रखा है।